ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Published on 28th February 2026

नासिरा शर्मा के उपन्यास 'जिंदा मुहावरे' में विभाजन की त्रासदी

संदीप कुमार, शोधार्थी NET/JRF, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
डॉ. अमित कुमार पांडेय, शोध निदेशक, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

आधुनिक हिंदी साहित्य के क्षेत्र में महिला साहित्यकारों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इन महिला लेखिकाओं ने अनेक अनछुए पहलुओं को उद्घाटित किया है। नासिरा शर्मा वर्तमान समस्याओं,भाव बोध, परिवेशगत अनुभूति और संवेदना आदि को लेकर साहित्य सृजन करने वाली महत्वपूर्ण लेखिका है। हिंदी, उर्दू, पश्तो, फ़ारसी और अंग्रेजी भाषा की ज्ञाता नासिरा शर्मा का जन्म 22 अगस्त 1948 ई. को इलाहाबाद में पढ़े लिखे परिवार में हुआ। आज के दौर में नासिरा शर्मा ही एक ऐसी प्रचलित लेखिका हुई है जिन्होंने विभिन्न परिवेश के समय और समाज, देश–देशांतर की सामाजिक सोच व ताने बाने को ईमानदारी और प्रामाणिकता से प्रस्तुत किया है।

'जिंदा मुहावरे' (1994) उपन्यास 1947 के विभाजन के दंश को पूरी जीवंतता से उद्घाटित करता है। बंटवारा चाहे घर का हो या देश का, सच्चाई यही रही है कि कोई भी खुशी प्राप्त नहीं कर सकता है, उसी तरह जिंदा मुहावरे उपन्यास भी एक घुटन, पीड़ा और दर्द की कहानी को अपने कलेवर में समेटे हुए है। इसमें बंटवारे की कोख से जन्मी एक चीख है,जिसकी अनुगंज आज भी सुनाई देती है।

हिंदुस्तान के बँटवारे की ख़ुशी को लाखों ने झेला-भोगा। जिनमें फ़ैज़ाबाद के एक रहमतुल्लाह भी थे । उसने अपने गाँव-घर की ज़मीन ख़त्म कर दी, अपना वतन ठीक नहीं किया जा सका। लेकिन निज़ाम का छोटा बेटा निज़ाम पाकिस्तान चला गया। जो हाल में रहा, थोड़ा बड़ा आदमी बन गया, यह एक अलग बात है, लेकिन सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि अपनी धरती अपना आकाश, अपने लोग भुलाए नहीं भूले। बाप, भाई, बहन, भाभी, पति ने ही नहीं, सुंदर काकी, मंगरु काका और बचपन के गँवार दोस्त बृजलाल ने भी इतना बड़ा कि जब वापस आये तो वह बिल्कुल टूट गये। यह पीड़ा, यह पीड़ा, यह छटपटाहट बड़े ही मार्मिक तरीके से उकेरे गए हैं, इस उपन्यास के पन्ने दर पन्ने में, यथार्थ लेखिका ने **'जिंदा मुहावरे'** में सिर्फ एक परिवार के माध्यम से इस कद्दावर सच को ला सामने खड़ा किया है कि इतने बड़े ऐतिहासिक यात्रा से उपजी पीड़ा किसी एक कौम की नहीं, बल्कि घटिया इंसानियत की है। नासिरा लिखती भी हैं – "दोनों तरफ के बाशिंदों के दर्द की जमीन एक है। खून का रंग वहीं इंसानी है। बस जरा सा फर्क यही है कि इधर वाले के जाने वालों के गुनाह की सलीब पर टांग दिए गए हैं और उधर वाले लगातार यादों के तहखानों से गुजर रहे हैं।" 1

'जिंदा मुहावरे' जीते जागते दर्द का एक दरिया है। यह गुजरे हुए समय की वेदना की भूली बिसरी टीस नहीं.....दर्द की शुरुआत है जो 1947 से शुरू हुई वह आज तक रुकने का नाम नहीं ले रही है,बल्कि दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। भारत-पाक बंटवारा तो राजनैतिक था। सीमाबंदी हुई, सीमा विभाजन हुआ, धरती के हिस्से पर बंटवारे की लकीरें खींची गई, लेकिन इस राजनीतिक दांव-पेंच के दंश को झेलने वाले एक ही मुल्क के भाई बहन आपस में अलग कैसे हो सकते हैं। बंटवारे के वक्त और उसके बाद उन पर क्या बितती है,इस दर्द को झेला है नासिरा शर्मा ने **'जिंदा मुहावरे'** उपन्यास में। इस संदर्भ में लेखिका लिखती हैं- "बंटवारा हमारी सोच का, हमारी भावना का हिस्सा बन चुका है। उस मानवीय विलाप से हम आज भी निकल नहीं पाए हैं, शायद अगले पचास वर्ष तक इससे निकल भी नहीं पाएंगे।" 2

'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में दर्द का यह सिलसिला सन् 1947 में शुरू हुआ और आज भी इस दर्द की चुभन में कोई कमी नही आई है। 75 साल बाद भी मुसलमानों को शक की नजर से देखा जाता है।दो देशों के बीच हुए युद्धों ने आज तक अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। इतिहास गवाह है कि भारत पाक बंटवारे में लाखों लोग बेघर हो गए थे। निजाम को एक चीज कचोटती रहती थी। इस पर निजाम कहता है –"जिस चीज को हासिल करने के लिए उसने जिंदगी के पैंतालीस साल गंवा दिए वह तो उसके हर रिश्तेदार के पास मौजूद है,फिर उसने हासिल क्या किया?" 3

तकलीफदेह सच्चाई यह है कि भारत का मुसलमान दोनों जगह परेशान है– सरहद के इस पार भी,उस पार भी और इस परेशानी का कारण राजनीति का भद्दा चेहरा है। आजादी के वक्त जो लकीरें खींच गई थी धरती के सीने पर वह अब चौड़ी खाई बन चुकी है। इसी सच के कारण यह रचना तमाम भ्रमों, शंकाओं को निरस्त करते हुए इस सच्चाई को सामने लाती है। कि राजनैतिक स्वार्थों के कारण भले ही धरती बँट जाए पर इन्सानी रिश्ते नहीं बँटते ! **'बोगदे से बाहर'** पुस्तक में डॉ. अमरीश सिन्हा लिखते भी हैं– "बंटवारा उनके गलों में पड़ा फांसी का फंदा बन चुका था,जो पूरी तरह कसता था, न ढीला होकर छूटता था"। 4

हिंदुस्तान के बंटवारे के दर्द को करोड़ों लोगों ने झेला भोगा था। इस उपन्यास में नासिरा शर्मा ने पाकिस्तानी जीवन के प्रवास को कथ्य बनाया है और पाकिस्तान में रहने वाले लोगों का भारत के प्रति लगाव व प्रेम को चित्रित किया है। उन्हीं में फैजाबाद के रहमतुल्लाह भी थे। वह खुद अपने गांव – घर की जमीन, अपना वतन छोड़ कर नहीं जा

सकते थे लेकिन उन्हीं का छोटा बेटा निज़ाम पाकिस्तान चला गया। निज़ाम बहुत कुछ भोग कर बड़ा आदमी बन गया लेकिन वह हिन्दुस्तान की धरती को नहीं भूल पाया। अब्बा रहमतुल्लाह, अपनी मां फातमा, बहन, भाई, भतीजा, सुंदर काकी, मंगरू काका, बचपन के गंवार साथी ब्रजलाल आदि के प्यार ने उसको भारत आने के लिए खींच लिया और जब वह फिर से भारत से पाकिस्तान वापस गया तो वह बिल्कुल ही टूट गया।

भारत-पाक बंटवारे को कुछ ग्रामीण बूढ़े लोग यह भ्रम पाले हुए थे कि जो लोग भारत को छोड़ कर कहीं दूर थोड़े ही गए हैं बल्कि अपने मुल्क के दूसरे हिस्से में पनाह लेने जा रहे हैं, हालात के ठीक होते ही अपने गांव वापिस आ जाएंगे। निजाम कहता भी है– "इन्हें कुछ भी नहीं पता है कि मुल्क दो हिस्सों में बंट चुका था– भारत और पाकिस्तान। हम पाकिस्तान रहने जा रहे हैं न कि वहां से वापिस लौट कर आने के लिए।" 4

जब निजाम घर छोड़कर जाने लगा तो घर में बहुत तकरार हुई सब ने कहा कि पाकिस्तान में अकेले जाने की जिद छोड़ दो सभी मुसलमान को डर था कि अगर यहां रहेंगे तो हम सब मारे जाएंगे हमारी जमीन छीन ली जाएंगे इमाम निजाम को संभालते हुए कहता है कि "भूल मत करो जमीन सबकी छीनेंगी जब जुल्म मुल्क से जमीदारी खत्म हो रही है तो इसका मतलब है हर घर छोटा बड़ा चाहे वह हम हो या कोई और पढ़ लिखकर नादान मत बनो बंटवारा मुल्क का हुआ है हमारे इस गांव का तो नहीं हमारा पूछते नहीं घर खेत रिश्तेदारी बिरादरी सब कुछ नहीं है वह तो किसी ने नहीं छीना।" 5

कराची पहुंचकर निजाम का दिल एक अनजान जगह को देखकर ऐसे घबराए की जी चाहा कि उल्टे पैर घर लौट जाए 2 दिन भूखा रहने और फुटपाथ पर सोने के बाद पेट की आग में निजाम को मजदूरी करने पर मजबूर कर दिया था। महीना भर कराची में रोते- पिटते गुजार लेने के बाद जब वह आस-पास नजर दौड़ाता तो जमीदार होने पर गुरुर हो जाता। बच्चो, जमीन, बाग, कुआं व घर-बार छोड़कर जिस मुल्क को वह अपना समझ कर आया वहां दो गज जमीन के लाले पड़े थे। नासिरा इस उपन्यास के संदर्भ में कहती है कि "अचानक '**जिंदा मुहावरे**' जहन के दरवाजे खोल कुछ इस तरह रचना के माथे पर टंक गया कि चाहने पर भी कोई दूसरा नाम न मुनासिब और न ही इतना अर्थपूर्ण इस कृति के लिए लगा जिसकी पृष्ठ भूमि बंटवारे के बाद का भारत–पाक समाज है।" 6 (दो शब्द से)

निष्कर्ष :-

निष्कर्षत: नासिरा शर्मा का यह उपन्यास न केवल विभाजन की त्रासदी का सजीव चित्रण है बल्कि यह मानवीय मूल्यों, सामाजिक एकता, सांस्कृतिक सहिष्णुता की आवश्यकता को भी सामने लाता है ।यह उपन्यास अतीत की घटनाओं को याद करने का माध्यम नहीं है, बल्कि भविष्य के लिए भी एक सबक है। यह कृति पाठकों को यह संदेश देती है कि समाज में वास्तविक प्रगति और शक्ति तभी संभव है, जब हम जातिवाद, सांप्रदायिकता और विभाजन की सोच से ऊपर उठ कर एक सहिष्णु और समावेशी समाज का निर्माण करें।

संदर्भ सूची :-

1. जिंदा मुहावरे, नासिरा शर्मा , वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण, पृष्ठ संख्या – 8
2. वहीं, पृष्ठ संख्या – 125
3. वहीं, पृष्ठ संख्या – 131
4. बोगदे से बाहर, डॉ. अमरीश सिन्हा, शिल्पायन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण – 2012, पृष्ठ संख्या -164
5. जिंदा मुहावरे, नासिरा शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण -2021, पृष्ठ संख्या – 13
6. वहीं, पृष्ठ संख्या – दो शब्द से